

दिलरुबा के सुर

शुभा

हमारे कन्धे इस तरह बच्चों को उठाने के लिये नहीं बने हैं
क्या यह बच्चा इसलिये पैदा हुआ था
तेरह साल की उम्र में
गोली खाने के लिये
क्या बच्चे अस्पताल जेल और कब्र के लिये बने हैं
क्या वे अन्धे होने के लिये बने हैं
अपने दरिया का पानी उनके लिये बहुत था
अपने पेड़ घास पत्तियाँ और साथ के बच्चे
उनके लिये बहुत थे
छोटा-मोटा स्कूल उनके लिये
बहुत था
ज़रा सा सालन और चावल उनके लिये
बहुत था
आस-पास के बुजुर्ग और मामूली लोग
उनके लिये बहुत थे
वे अपनी मां के साथ फूल पत्ते लकड़ियाँ
चुनते
अपना जीवन बिता देते
मेमनों के साथ हंसते खेलते
वे अपनी ज़मीन पर थे
अपनों के दुख-सुख में थे
तुम बीच में कौन हो
सारे करार तोड़ने वाले
शेख़ को जेल में डालने वाले
गोलियाँ चलाने वाले
तुम बीच में कौन हो
हमारे बच्चे बागी हो गए
न कोई ट्रेनिंग
न हथियार
वे ख़ाली हाथ तुम्हारी ओर आए
तुमने उन पर छर्रे बरसाए
अन्धे होते हुए
उन्होंने पत्थर उठाए जो
उनके ही खून और आंसुओं से तर थे
सारे करार तोड़ने वालों
गोलियों और छर्रों की बरसात
करने वालों
दरिया बच्चों की ओर है
चिनार और चीड़ बच्चों की ओर है
हिमाले की बर्फ़ बच्चों की ओर है
उगना और बढ़ना
हवायें और पतझड़
जाड़ा और बारिश
सब बच्चों की ओर है
बच्चे अपनी कांगड़ी नहीं छोड़ेंगे
मां का दामन नहीं छोड़ेंगे
बच्चे सब इधर हैं
करार तोड़ने वालों
सारे करार बीच में रखे जाएंगे
बच्चों के नाम उनके खिलौने
बीच में रखे जायेंगे
औरतों के फटे दामन
बीच में रखे जायेंगे
मारे गये लोगों की बेगुनाही
बीच में रखी जायेगी
हमें वजूद में लाने वाली
धरती बीच में रक्खी जायेगी
मुक़द्दा तो चलेगा
शिनाख़्त तो होगी
हश्र तो यहां पर उड़ेगा.
स्कूल बंद है
शादियों के शामियाने उखड़े पड़े हैं
ईद पर मातम है
बच्चों को क़ब्रिस्तान ले जाते लोग
गर्दन झुकाए हैं
उन पर छर्रों और गोलियों की बरसात है.

यह सप्ताह / मुस्कुराहट का महत्व



कोलंबा कालीधर

अगर आप एक अध्यापक हैं और जब आप मुस्कुराते हुए कक्षा में प्रवेश करेंगे तो देखिये सारे बच्चों के चेहरों पर मुस्कान छा जाएगी।

अगर आप डॉक्टर हैं और मुस्कुराते हुए मरीज का इलाज करेंगे तो मरीज का आत्मविश्वास दोगुना हो जायेगा।

अगर आप एक गृहणी हैं तो मुस्कुराते

हुए घर का हर काम कीजिये फिर देखना पूरे परिवार में खुशियों का माहौल छा जायेगा।

अगर आप घर के मुखिया हैं तो मुस्कुराते हुए शाम को घर में प्रवेश करेंगे तो देखना पूरे परिवार में खुशियों का माहौल बन जायेगा।

अगर आप एक बिजनेसमैन हैं और आप खुश होकर कंपनी में जाते हैं तो देखिये सारे कर्मचारियों के मन का टेंशन कम हो जायेगा और माहौल खुशनुमा हो जायेगा।

अगर आप दुकानदार हैं और मुस्कुराकर अपने ग्राहक का सम्मान करेंगे तो ग्राहक खुश होकर आपकी दुकान से ही सामान लेगा।

कभी सड़क पर चलते हुए अनजान आदमी को देखकर मुस्कुराएँ, देखिये उसके चेहरे पर भी मुस्कान आ जाएगी।

मुस्कुराइए, क्योंकि मुस्कुराहट के पैसे नहीं लगते, ये तो खुशी और संपन्नता की पहचान है। मुस्कुराइए, क्योंकि आपकी मुस्कुराहट कई चेहरों पर मुस्कान लाएगी।

मुस्कुराइए, क्योंकि ये जीवन आपको दोबारा नहीं मिलेगा। मुस्कुराइए, क्योंकि क्रोध में दिया गया आशीर्वाद भी बुरा लगता है और मुस्कुराकर कहे गए बुरे शब्द भी अच्छे लगते हैं।

मुस्कुराइए, क्योंकि दुनिया का हर आदमी खिले फूलों और खिले चेहरों को पसंद करता है।

मुस्कुराइए, क्योंकि आपकी हँसी किसी की खुशी का कारण बन सकती है।

मुस्कुराइए, क्योंकि परिवार में रिश्ते तभी तक कायम रह पाते हैं जब तक हम एक दूसरे को देख कर मुस्कुराते रहते हैं।

"मुस्कुराइए, क्योंकि मनुष्य होने की यही पहचान है।"

इसलिए स्वयं भी मुस्कुराएँ और औरों के चहरे पर भी मुस्कुराहट लाएँ, यही जीवन का आनंद है।

और आनंद ही जीवन है।

व्यंग्य

मयंक सक्सेना

पिछले शनिवार शाखा से लौटे कुछ लोगों के साथ चाय की दुकान पर एक बुजुर्ग मिले... वो भी बड़े खुश थे, हिंदुत्व के नाम पर हिंसा की फहराती पताका से... सबके जाने के बाद मुझसे बात करने लगे...

मैंने उनसे पूछा, "आप का बेटा अगर कल को हिंसा-हत्या करने वाली भीड़ में शामिल हो... तो क्या आप उसे रोकेंगे?"

वो बोले, "ये तो परिस्थिति की बात है... मैं वहां होऊंगा और फिर आखिर क्यों हिंसा हो रही है..."

मैंने पूछा, "आप का बेटा क्या करता है..."

वो बोले, "इंजीनियर है... विदेश जाने वाला है..."

मैंने पूछा, "विदेश जाने देंगे?"

वो - क्यों नहीं...

मैं - उसे यहीं रह कर देशसेवा करने दीजिए... धर्म का काम करेगा...

वो - जैसी उसकी मर्जी होगी... इतनी पढ़ाई की है...

मैं - तो अगर वो ऐसी भीड़ में शामिल हो गया... तो कभी विदेश जा पाएगा... नौकरी भी कर पाएगा...

वो -
मैं - अच्छा मान लीजिए, कल को वो घर से निकले कि आज किसी मुसलमान को मारूंगा... दंगे में ऐसा करने चला जाए... तो रोकेंगे उसे?

वो - (कुछ देर चुप रह के...) हां... रोकेंगे ही...

मैं - क्यों?

वो - अरे, ऐसे थोड़े ही बेटे को हत्यारा या क्रिमिनल बन जाने देंगे...

मैं - लेकिन ये तो धर्म की बात है...

वो - तो क्या... मतलब लाइफ खराब हो जाएगी...

मैं - लेकिन अभी तो आप अफराजुल के हत्यारे को वीर और योद्धा और बाका कह रहे थे...

वो - वो ठीक है...

मैं - मतलब, दूसरे का बेटा जेल जाए... आपका न जाए...

वो - (चुप)

मैं - लेकिन आप उसे ऐसा करने से रोक नहीं पाएंगे...

वो - क्यों...

मैं - आप रोज़ घर में ऐसी चीजों की बड़ाई करेंगे... ऐसे हत्यारों को वीर बताएंगे... तो वो भी तो प्रेरित होता... आखिर कब तक रुकेगा... एक दिन पूछ लेगा आपसे... कि आप ही तो पापा इस काम को महान कहते हैं... कैसे रोकेंगे उसे... क्या जवाब देंगे... कि वो सारे काम गरीब लोगों के लिए हैं...

वो - (चुप)...

मैं - आप इस बात को अभी नहीं समझ रहे हैं... बाद में समझेंगे, जब आप के अपने बच्चे जा कर यही कल्ल ओ गारत करेंगे...

वो - नहीं... लेकिन...

मैं - अच्छा मान लीजिए, आपका बेटा ऐसा कर दे... तो फिर उसका कोर्ट में बचाव करेंगे कि नहीं?

वो - करेंगे ही...

मैं - तो क्या कहेंगे? उसने ही मर्डर किया है...

वो - ऐसा कौन कहता है...

मैं - मतलब झूठ बोलेंगे...

वो - अरे तो बचाते ही हैं न अदालत में...

मैं - लेकिन झूठ क्यों बोलना... वो तो

चलिए एक सच्ची घटना का जिक्र करता हूँ...

धर्म के लिए कर रहा है... स्वीकारना चाहिए इसको... झूठ क्यों बोलना... बलिदानों के बिना धर्म कैसे बढ़ेगा और उसकी पताका फहराएगी... आपका बेटा धर्म के लिए लड़ेगा और आप इस बात को छुपाएंगे... पाप है क्या?

वो - (एक मिनट तक चुप थे...)

मैं - क्या ये नेता बीजेपी, आरएसएस, बजरंग दल, विहिप... आपके बेटे को बचाने आएंगे तब?

वो - आज तक किसी को बचाया... गुजरात में भी बड़े वाले ही बचाए गए सब... कोडनानी को भी नहीं बचाया...

मैं - क्या हुआ अंकल...

वो - बेटा... बात तो तुम्हारी सही है...

मैं - अंकल, आपको, आपके परिवार को, आपके दोस्तों को और आपके समाज, आपके धर्म ... सबको इस्तेमाल किया जा रहा है... आप लोग सिर्फ डायपर हैं, जिनसे गंदगी पोंछ कर, उसे सजाया नहीं जाता... फेंका जाता है... डायपर मत बनिए... इस गंदगी से अपने परिवार को बचाइए...

वो - चुप थे...

मैं - चलता हूँ अंकल...

वो - नाम क्या बेटा तुम्हारा...

मैं - आपका ही बेटा हूँ... मुझे बचा लीजिए... चाहें जो नाम रख लीजिए उसके बाद....

THE BEST PLACE FOR
YOUR FAMILY DINING &
GET-TOGETHERS. PARTIES

HOTEL EKANT

SCF-12,13,14 SECTOR 17, MARKET,
FARIDABAD
FOR BOOKINGS, CALL US AT
0129-4071291, 0129-4071292,
.9821128528

APPETIZING & HYGENIC
FOOD, GREAT
AMBIENCE & EXCELLENT
HOSPITALITY...



ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ

हमारे देश का इतिहास स्वर्णिम रहा है। फिर भी हमारे देश को परतंत्रता की एक लंबी सीमा झेलनी पड़ी। एक समय था जब हमारा देश सोने की चिड़िया कहलाता था फिर इस देश को गुलामी की त्रासदी क्यों झेलनी पड़ी? हमारे देश में इतने महान व्यक्ति हुए जिन्होंने

देश-विदेश सब जगह हमारी सभ्यता और संस्कृति की पताका फहराई। हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति बहुत ही महान रही है, जितने भी महापुरुषों ने भारत में जन्म लिया वे सभी भारत के रतन के रूप में उभरे। सभी ने उच्च विचारों के माध्यम से देश को ख्याति दिलाई। फिर भी देश परतंत्र हुआ यह सोचने का विषय है। अनेक प्रयत्नों के फलस्वरूप हमें यह स्वतंत्रता प्राप्त हुई। अनेक महान योद्धाओं ने अपने प्रयासों एवं प्राणों की बलि देकर यह आजादी प्राप्त की पर अभी हमें स्वतंत्रता का अर्थ जानना होगा। स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ है स्वचालित कार्य प्रणाली अर्थात् अपने कार्य एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक होना। आज भी हम अपने कर्तव्यों एवं कार्यों के प्रति जागरूक नहीं हैं यदि हम पर दंड या जुर्माने का प्रावधान है तो हम अपने कर्तव्यों के प्रति सचेत हैं अन्यथा हम सर्वप्रथम अपने कर्तव्यों को ही भूलते हैं।

हम पढ़-लिखकर केवल अपने अधिकारों के लिए ही जागरूक हो पाये हैं परन्तु अभी भी हम अपने कर्तव्यों एवं विचारों के लिए जागरूक नहीं हैं अर्थात् पूर्ण रूप से अपने कर्तव्यों के लिए सजग नहीं अथवा उदासीन हैं। यदि हमें नियमों का पालन नहीं कर रहे हैं तो अवश्य ही हम राष्ट्र से प्रेम नहीं करते और अपने कर्तव्यों के प्रति उदासीन हैं। यही उदासीनता राष्ट्र की प्रगति में भी बाधा बनती है और यही कारण है कि हमने चार सौ सालों की पराधीनता झेली परन्तु अब समय आ गया है जब हमें अपने राष्ट्र के प्रति जागरूक होना पड़ेगा। अपने कर्तव्यों एवं विचारों के लिए स्वतंत्र होना होगा। हमें सोचना होगा कि स्वतंत्रता दिवस केवल मात्र एक पर्व नहीं जिसमें केवल खुशियाँ ही मनाई जाती हैं। यह स्वतंत्रता दिवस हमें याद दिलाती है कि कहीं पर हम चूक गये थे और अपने कर्तव्यों से पीछे हटे तो हमें पराधीनता का अभिशाप झेलना पड़ा परन्तु अब हम स्वतंत्र हैं तो हमें सर्वप्रथम अपने विचारों के परिवर्तन करना होगा, स्वतंत्रता के वास्तविक अर्थ को जानना होगा।